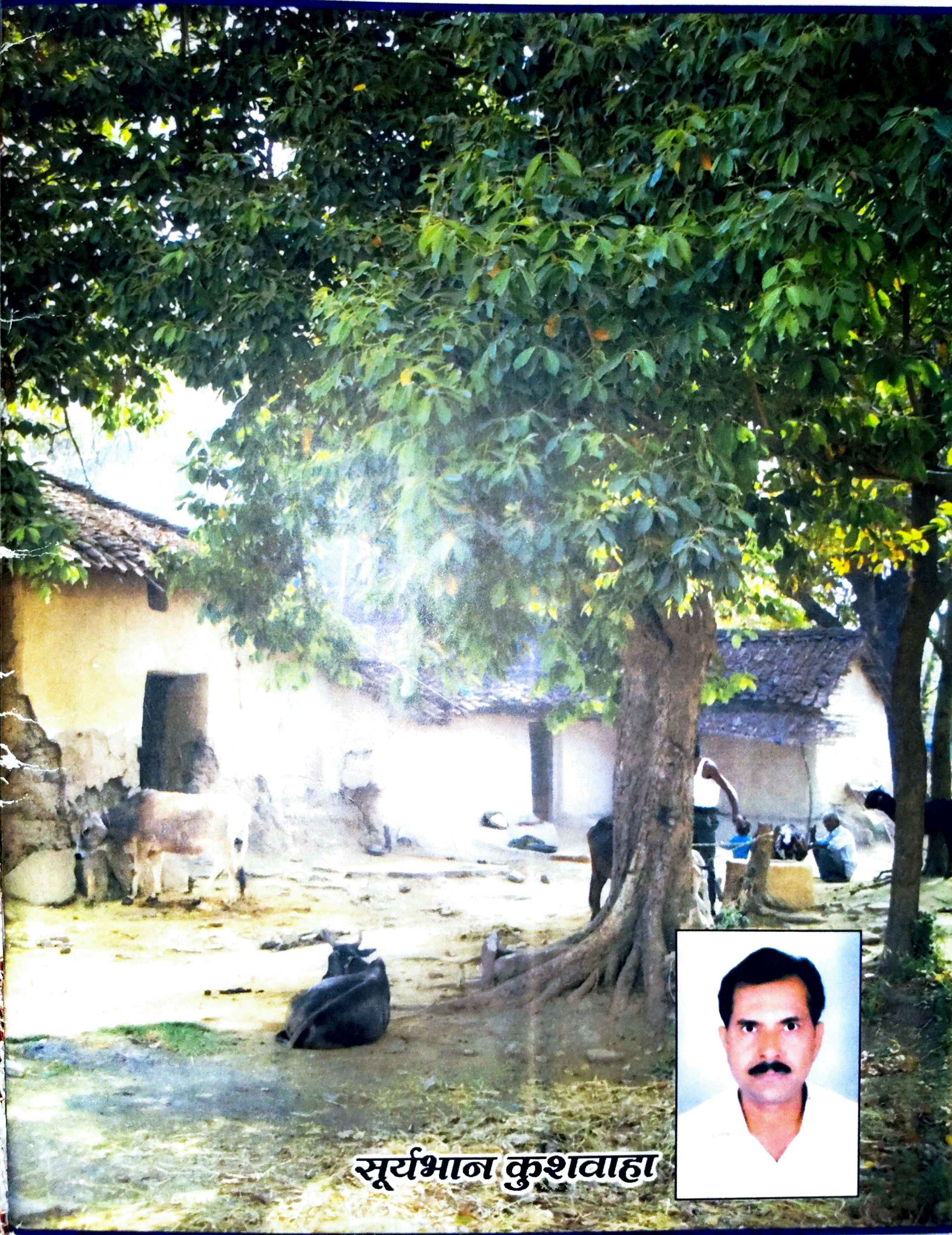
गाँव गोहार

(बघेली कविता संग्रह)



सूर्यभान कुशवाहा



गाँव गोहार

(बघेली कविता संग्रह)

रचयिता

सूर्यभान कुशवाहा

कृति लोकार्पण 11 मई 2012
डॉ० सत्येन्द्र शर्मा, प्राचार्य
शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना
के कर कमलों द्वारा संपन्न

प्रकाशक

एकता सृजन कुटीर

कुशवाहा कालोनी क्र.-2, हनुमान नगर
नई बस्ती, सतना - 485 001 (म.प्र.)
मोबाइल : 9827751120
E-mail : kushwaha.sb72@gmail.com

परिचय



सूर्यभान कुशवाहा

जन्म – 10 अगस्त सन् 1972 को सतना जिले की ग्राम पंचायत मरौहां के श्रमिक परिवार में ।

पिता – श्री रामपाल कुशवाहा

माता – श्रीमति सरमनियां देवी

शिक्षा – अवधेश प्रताप सिंह विश्व विद्यालय,रीवा से हिन्दी साहित्य एवं समाज विज्ञान में स्नातकोत्तर ।

प्रकाशन – प्रकाशित कृतियों के रूप में "गॉव गोहार" प्रथम लोक भाषा बघेली संग्रह। आकाशवाणीं रीवा केन्द्र से रचनायें प्रसारित। तथा विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में यथा समय रचनायें प्रकाशित।

संप्रति – **एम.पी.बिरला** अस्पताल,सतना के पंजीयन विभाग में सेवारत ।

वर्तमान निवास – वार्ड क्रमांक – 17, कुशवाहा कालोनी क्र.–2,आर.के. **मेमोरियल स्कूल के पास**, हनुमान नगर,नई बस्ती, सतना,म.प्र.,
मोबाइल – 9827751120

अपना पंचन से बिनती

अपना पंचन का हमार जथा जोग राम राम, दुआ सलाम ।

मनई अपनें जिंदगानीं के दुक्ख सुक्ख देखत भोगत, जुग के साथ कॉधा से कॉधा मिलाबत बहुत दूरी कढ़ि आओ है ।हम पंचे गॉव गमइन के मनई आहेन मनई के पूरी जिंदगानी खेती किसानी बनी मजूरी करत चली जात ही ।मनई के खेतिव किसानीं मा, मनभर बिजुली पानीं खाद बीज जूना बेरा मा नहीं मिल पाबै एसे दऊ का टकटकी लगाये आंखी काढ़े निहारत रहत है ।जउन मनई सोचत रहा है,कि आसव के साल गिरहस्थी के पछिले काम सकेल लेब,लड़िका बिटियन का कुछ ढंग के स्कूलन मा नाव लिखबाय देव,जो कहौ तोरा तहाई सध जई, बड़कीवा विटिऔ के हांथौ पियर कर ल्याब, अउर मेर मेर के समस्या हई उनहीं निपटाय लेब,या दऊ भरोसे किसानीं मा हमार पंचन के सोचा बहुतै कम होय पाबत है।

मनई आज चाहे भले जोधइआ मा मेछराय चुका होय, जिहाज मां चढ़िके सरग मां चिरइअन कस मेड़रात होय । भले चाहे मोबाइल का चुनहाई डिबिया कस खलीसा मां डारे कानें मां छुपकाये फिरत होय ।अउर सगला दिन कम्प्युटर मां आंखी काढ़े बइठे बइठे सगले दुनियॉ जहान के दरसन करत होय ।पै आजव बहुतेरे गॉव गमइन मां गांधी बाबा के ग्राम स्वराज बाला सपना सच होत देखाई नहीं परै सरकार के भरसक प्रयास के बादौ मनई, गांव गमइन मां मेर मेर के समस्यन से जूझि रहा है । चाहे घर दुआर,पानीं पिंगल के व्यवस्था होय या फेर गिरहस्थी के भरमजाल के ।

आज काल हमरे पंचन के घर दुआर, गांव पड़ोस मां पहिले के जइसन भाई चारा हितुआरस नहीं रहिगै । मनई आपन आपन

स्वारथ देखि रहा है।पड़ोसी खात है,पियत है,जिअत है मरत है,कउनौं मतलब नहीं राखै।घरै घर मां रोज उठ बिहन्ने अपनिन अपना भाई भाई बाप पूत नंची नंची के बातन मां जूझे लड़े जाय रहें है ।या बेलकुल निकहा न होय, हमहीं पंचन का घर घर,आस पड़ोस गांव मोहल्ला मां साहुत के बिरबा गाड़ के आपस मां मिलजुल के रहै का पड़ी।सब मेर के समाजिक कुरीतियन से दूरी रहैं का पड़ी। अउर अपने घिनहाई का त्याग के अपने का सुधारैं का पड़ी। एसे कि जब हम सुधरब लड़िका बिटिआ सुधरिहै,आस पड़ोस, गांव मेंड़उर सुधरी,आपन देश सुधरी ।

हमहूॅ अपना पंचन के बीचै मां यहै बघेल खण्ड के मांटी मां पइदा भयन,खेलेन कूदेन,पढ़ेन लिखेन है। यहै के सोध सोंध माटी मां लोलार करत,यहैं के धूधुर मांटी मां लोटत पोटत गुड़न्ता खात आज यहां तक पहुंचेन हैं। गरीबी का आय हम लघे से देखेन है, भोगेन है। अपना से बतामै चाहब कि हम कउनौं कवि विद्वान न होहेन ।आज के जून जमाना मां जउन देखेन भोगेन है ओहिन का अपने बोली भाषा बघेली मां से आंड़ बेड़ंगा जइसन बना अक्षर के फूलन का गुहि गुंहि के माला बनाय के या पोथी के रूप मां लै आयन हैं । पोथी मां जउन गलती होंय ओखे खितिर हम अपना से माफी चाहब। अउर बिनती करब की अपना पंचे आपन नीक नीक बिचार सुझाव हमहीं देत रही ।आज के महगाई के जुग मां मनई के खाबै खरिच से जादा कुछुऔ नहीं बच पाबै, कि किताब पोथी छपबाबै ।पै कइसौ मइसौ अपने हिस्सा से कहौं न कहौ कटौती कइके या जबर काम अनमाधेन है ।जउन अपना पंचन के आशिर्वाद से पूरा होइगा ।हम अपना पंचन के सुझाव अउर ओरहन का टकटकी लगाये ताके हयन ।

जय भुंइया माता,जय बघेली ।

– रचयिता

कविता क्रम सूची

नेउता
दुनियाँ के गुनियाँ का

गुनियॉ तहिन बनामैं बाले,दुनियॉ तहिन सजामैं बाले,
जीवन के टुटही मड़ई का,ऊपर से तैं छामैं बाले।

तोर बिना चलै न बइहर,डोल न पाबै पत्ता,
तीन लोक चहुं दिशा मां छाई,तोरै अद्‌भुत सत्ता।

जूठन बइर खाय सबरी के,जिउ हरियर कइ लेते,
अउर कहौं पाथर का छुइके,तैं नारी कइ देते।

कहौं सुदामा दालिद का तैं,हिरदय मां छुपकाये,
कहौं द्रोपदी के गोहार सुनि,मर्जादा बरकाये।

बने नसाने दुक्ख सुक्ख मां,ढाढ़स तहिन बधउते,
जब जब कष्ट बढ़ै भुइयां मां,देउता बनके अउते।

बने कहौं ईसा मसीह तैं,या धरती मां आये,
प्रेम दया करूणा के सबका,निकहे पाठ पढ़ाये।

पैगंबर नानक बनि आके,सबका अकिल बताये,
निकहाई के राह चलै का,सबका तहिन जताये।

बिल्लियान मनई है पुनिके,आ जाते एक दारी,
अउर लघे से देखिव लेते,इनखर दुनिया दारी।

साइत मान जांय ई कइसौ,सुधर जांय ई देउता,
हम ''कुशवाहा'' भेज रहेन है,आमैं खतिर नेउता।

गुलतुल बोल बघेली के

सूखी रोटी नोन कनेमन,अउर कहौं गुड़ भेली के,
महतारी के जइसन पिरिया,गुलतुल बोल बघेली के।

कोलदहकी,बिरहा,औ टप्पा, खूब टना टन गाई,
फगुआ भगत मगन है सब जन,पंडन के अभुआई।

फूल करौंदा अँतर लपेटे,गमकि रहै गमकउआ,
गुलमेंहदी के फूल दमादम,दमकि रहै दमकउआ।

छुइला फूल महउरा जइसन,पउदर लाग नवेली के,
महतारी के जइसन पिरिया,गुलतुल बोल बघेली के।

बन पहार के सब पकि आये,तेंदू चार कटइया,
खटमिट्ठी बन बइर बरारी,लदिगै खूब मुकुइया।

महुआ फूल चुआबै टप टप, पतरोई मां मिसरी,
झउआ लये समेंटब महुआ,भला कबौ या बिसरी।

खडुआ पहिर कमर लचकाउब,बोझा धरे "चमेली" के,
महतारी के जइसन पिरिया, गुल तुल बोल बघेली के।

शादी अउसर बन्नी बनरा, दादू भये के सोहर,
अउर कहौं फुरसत के सइला,लागैं खूब मनोहर।

बनै कलेबा भगर गोलहथी,कोहड़ी चना चबइना,
अउर घरन घर महुआ लाटा,धरा रहै भर पइना।

तीजा फगुआ कुसली पपरी,कबौ पेउसरी तेली के,
महतारी के जइसन पिरिया,गुल तुल बोल बघेली के।

दूनौं गाल भरे भुरकुण्डा,मुहूं चाट चोखलाई,
बगरी सेंतुआ रहै सहारा,नातौ भाई पाई।

भाई चारा साहुत बिरबा,सदौं रहैं हरिआनें,
करैं पइसरम जांगर टोरे,भागैं रोज बिहानें।

फूट जांय दर्रा एड़िन मां,ठेंठा पके गदेली के,
महतारी के जइसन पिरिया,गुलतुल बोल बघेली के।

खेतन मां पसरी हरियाली,देखि देखि हरियानें,
दऊ भरोसे खेती आपन, ढंग देखि चउआनें।

बूंदा बांदी आंधी पानी, जब सरकाइस पथरा,
भूंजी भाग बचा न एक्कव,लगिगा सबके चिथरा।

अब का होई आंगे सोचा,उत्तर देआ पहेली के ,
महतारी के जइसन पिरिया,गुलतुल बोल बघेली के।

खूब मलाई छानें

कहां लुके आजादी मइया,हमका नहीं देखाने,
ऊँचे ऊँचे महल मा बइठे, खूब मलाई छाने।

साठन साल गुजरिगे भइलो, आजादी का आये,
निबलेन के आंखिन के आंसू,आजिव पोछि न पाये।

सब दिन कुन्नियाव तैं कीन्हे,बड़कै का पछिआने,
बिल्लियान आजौ बागत है, कलुआ रोजै थानें।
कहाॅ लुके आाजादी मइआ .... ।

कबहूं खतम नहीं होय पाई,बपुरेन केर तबाही,
या दुर्गति के गामौं बाले,केतनो हेमैं गबाही।

आंगनबाड़ी के खिचड़ी से,भइसी है गमरानीं,
खाय खाय सरकारी हलुआ,गइऔ खूब पल्हानीं।

गभुआरन के हिस्सा कांहीं,खाय खाय गुर्रानें,
कहाॅ लुके आाजादी मइया............................ ।

चीन्ह चीन्ह रेउरी बंटती हैं,चीन्ह चीन्ह पंजीरी,
पग पग मांहीं चलै लाग ही,उनखर दादागीरी।

कलुआ ठाढ़ रहै कोटा मां,लाइन मांहीं पीछे,
रोवै करम मां कारठ धइके,नटई कइके नीचे।

हुकुम मिला चुप्पय भीतर से,परसों अया फलानें,
कहां लुके आजादी मइया................................. ।

सरकारौ के केत्यू बनती रहैं,गरीबी रेखा,
फेरौ इनखर बदल न पाई,आजिव जीवन रेखा।

कागज मां हसिया के बहिरे,नाव लिखा है इनखर,
सबै योजनन मांहीं पट्टा धरा लाग है उनखर।

फुर कहिदीन्हे चिमटा लागै,टोके से गमरानें,
कहां लुके आजादी मइया......................................।

स्कूलौ मा कमीं न एक्कव,रोज खुलैं मनमाना,
पानौ के ठेलिआ से जादा,गिनती इनखर जाना।

केतनी होय पढ़ाई इनमा, अपना पंचे जानी,
केतनी शिक्षा देय गुरूजी,होइगे लड़िका ज्ञानीं।

या सुराज मां बड़ा सुखउटा,सुनते हया ढेकानें,
कहां लुके आजादी मइया....................................।

कोतवाली मां धनिया लुटगै,लहसुन लुटै कचेहरी,
मर्जादा का मूंद न पाइस, भेण्डी लुटगै डेहरी।

संविधान के उल्टा होइगे, नियम अउर कानून,
पग पग लुटै बिचारी जनता,अउचट लागै चून।

मुड़धरिया कोऊ न इनखर,दाल गलै मनमानें,
कहां लुके आजादी मइया..................................।

बाल श्रमिक मजदूरी

केत्यो लये तगाड़ी ढोमै,लगिगा इनखे खउरा,
केत्यो पेट खलाये सोमै,दूढ़ न पामैं कउरा।

रेल अउर बस अड्डन मांही,बिकनैं माचिस बीड़ी,
केत्यो जाय खलीसा काटैं,स्टेशन के सीढ़ी।

केत्यो उनखा हउली मांहीं,बइठे पैक छनामैं,
होटल ढाबा बंगलन मांही,खानौं घाल बनामैं।

कागज मांही खूब बनें,कानूनौ बहुत जरूरी,
आजिव भला कहां रूकि पाई,बाल श्रमिक मजदूरी।

केत्यो लये बर्रबा बागैं दिन भर मारैं मछरी,
केत्यो धरे कपारे बोझा,ढोमैं करम के गठरी।

केत्यो जाय समेटे खरिका,गोरूआ घाल चरामै,
तरस जाय टूकौं भर कांही, बइठे पेट खलामैं।

जउने उमिर मा पोथी चाही, हाथेन माही बस्ता,
सब कोऊ पकड़ाई इनहीं,ऊपर बाला रस्ता।

बालापन के उमिर मा केत्यो,दिन भर करैं मजूरी।
आजिव भला कहां रूकि पाई,बाल श्रमिक मजदूरी।।

केत्यो उनखे बंगलन माही,सबके ओन्हा फीचै,
झाड़ू पोछा बर्तन कइके,गमली गमला सींचैं।

केत्यो उनखर कुट्टी बिनके,सिंगरिट बीड़ी सोटैं,
केत्यो उनखे खीतिर घर मां,भांग धतूरा घोटैं।

गाँव शहर के कचरन मांही,बीनैं पन्नी लोहा,
कीचर लार बहाये बागैं,जीवन होइगा सोहा।

शासन के अभियान बहुत हैं,अबहूं इनसे दूरी,
आजिव भला कहाँ रूकि पाई,बाल श्रमिक मजदूरी।

गाँव गोहार

साहुत बिरबा टूटिगा,चड़मड़ जाय बिझान,
सबतर कांटा बोइके, मनई हबय उतान ।

हींठब तक दुर्घट हबै,गलिव घाट मा आज,
स्वारथ के कांटा गड़ै,मतलब के है राज ।

धौं केतना लागै उन्ही,इनखर हाड़ा मीठ,
खूब चचोरैं नोंच के,तउ न लागै डीठ।

आपन अकिल देखाय के,मनई होइगा बाज,
कोइली आफत मा फसी,कउअन के भा राज।

कउरा आपन छांड़ के जाय सोहारी खाय,
कउरौ तक पाइन नहीं,कुकुरा लइगा आय।

उनखे पंचन चाल से,जन मानस है त्रस्त,
मनमानी छुट्टा चरै, मनई होइगा पस्त ।

आफत के मोटरी धरे,तिलमिल होय कपार,
मुडधरिया कोऊ नहीं,मचिगा **गांव गोहार।**

आपन गॉव मरौंहॉ

कहौं बनी इटहाई बखरी, मड़ई कहौं पटौहॉ,
आबा चली देखाई सबका, आपन गॉव मरौहॉ।

सतना शहर के पूरब कइती,माधवगढ़ के पासै,
गॉव सिधौली के है पूरब, बना तलाबौ खासै।

कच्ची गहिल नहर है निकली,भुइयॉ काही चीरे,
अन्नौ दाना होंय लाग अब, बसिगा पानीं तीरे।

रानीं तलबा बाले शंकर, दुआ खूब बरसामैं,
बने नसाने दुक्ख सुक्ख मां, ढाढ़स ईन बंधामैं।

पक्की सड़क बनी है निकही, दच्चौ भर न लागै,
सब मनई सइकिल गाड़ी मां,निधड़क होइके भागै।

कबरा बाले नातौ भाई, बसे गॉव के मोहरा,
दूध दही के कमीं न एक्कव,भइसी लागैं दोहरा।

अउर बढ़ब जब आगे कइती,पउबै एकठे बखरी,
दद्दा साहब के सुधि कीन्हे,आजव सबका अखरी।

आजौ धरी पटौहॉ पाउब, पुरखाती कै पलकी,
नई बहुरिआ ससुरे आमै, सुध करबै त झलकी।

मुन्नू कक्कू केर मड़इआ, आगे कइती पउबै,
बीड़ी बनबत आंखी काढ़े, आजव अपना पउबै।

अउर बगल मां बनी लाग ही,लड़िकन के स्कूल,
पढ़ेन लिखेन हमहूं एहिन मां,चंदन यहॉ के धूल।

सुक्ख दुक्ख के हबै गबाही, मुन्ना केर पिपरबा,
सुत्ते बपुरे खॉय न पाइन,उई रोपिन जब जेरबा।

रही गरीबी पसरी इनखे, दालिद धरे खोपड़िया,
यहै आय लोलिया कक्का के,आफत केर झोपड़िया।

मेहनत खातिर सदौ बिचारे,रहैं रात दिन ठाढ़े,
लक्ष्मिनिया कबहूं न आइ, कइसौं इनके डाड़े।

धन्न धन्न दालिद कै देउता,जइसा इनका चीन्हे,
अइसन फेर गरीबी कबहूॅं,बैरिव का न दीन्हे।

बनी मिली दस घर के बस्ती,पीपर के कुछ आंगे,
बाबा साहब के ढर्रा चल,अब निकहा के जागे।

रविदास बाबा का आपन,पुरखा सब जन मानैं,
बनी मजूरी करैं बिचारे, सबका आपन जानैं।

अउर घुसब जब गॉव के भीतर,फुटहे घर कुछ पाउब,
टटबारा सब झिलगे झिलगे, टुटही खटिया पाउब।

मूड़ फेकारे पाउब अपना,खड़ी अड़ारन बखरी,
सूरत ऐखर देख ल्याब त,अपनौं काहीं अखरी।

कॅधई बाबा के कुल बिरबा,एहिन मां हरियान,
छःभाईन मां चउसठ होइगे,जनता नहीं अमान।

नौमीं मांही गॉव के पंडा, यहैं खूब अभुआंय,
काली खप्पर खेल तमासा,देख देख चउआॅय।

यहैं आय पइदाइस मोरौ, एहिन मांही खेलेन,
निकहे घिनहे दिन सब भइया,एहिन मांहीं झेलेन!

जून जमाना पलटी खाइस, मनई होइगा जादा,
भुई जमीन सब ओत्तिन रहिगै,जनता होइगै जादा।

तब जादातर भाठे मांही,घर बनाय के बसिगें,
बखरी का कै रामभरोसे,भरमजाल मा फसिगे।

बाबा जोगी बसे लाग है,जाय गॉव के बाहर,
रहैं भीख मांगत ई सब दिन,जूड़ौ बांधै ठाहर।

गेरूआ ओन्हा पहिर लेय ई,बोलैं बम बम भोला,
चिमटा लये बजाबत बागै,टागैं लमहर झोला।

पूरब कइत निहारी देखी,टिकुरा जउन देखान,
कहैं टिटहरी डाड़ी एही, खेले के मइदान।

लड़िका बच्चा सांझ सकारे,एहिन मांहीं खेलैं,
कसरत करैं रोज भिंसारे, दण्डौ बइठक पेलैं।

देखी वहॉ जाय छोरे मां, बसे हेमै अदिवासी,
भले गरीब हेमैं ई बपुरे, साहुत इनमा खासी।

भिंसारेन से लकड़ी बीनै,घर का छांड़ के भागैं,
आपन पेट चलामै खतिर, बन पहार मां जागैं।

बनी मजूरी करैं बिचारे, अउर सांझ के आमैं,
आपन थकी मिटामै खीतिर,कोलदहकी जुरि गामैं।

लये नगड़िआ लोलरा कक्का,दे टना टन मारैं,
ढोलकी पीटैं दिन्ना कक्कू, दे धमा धम झारैं।।

सगली रात मचै कोलदहकी, झूमैं नाचैं गामैं,
मस्त रहैं अपनेन मां सगले,जीवन के सुख पामैं।।

देख लिहेन हमरे भुइयां का,आय गांव कै माटी।
भुइयॉ माता केर करेजा, महतारी कै थाती ।।

पांच दोहे

1– तड़के ककऊ चल दिहिन,बांध मुड़ेठा खेत,
मांघ पूस के ठार मां, घुसा जात है पेट।

2 – गाल ओठ चिटकै लगे,बिना लगे चिरभोट,
खलरी सकिली ठिठुरिगै,खाय जाड़ के चोट।

3– घोंपा मा सथरी डरी,कोदौ पइरा लाय,
ककऊ के ठारी कटै,खेत हार मा जाय।

4 – काकिव बचैं का जाड़ से,बपुरी किहिस उपाय,
फटहे ओन्हा जोरि के,कथरी लिहिस बनाय।

5– खेतन मा गोहूं खड़ा,हरी चुनरिया ओढ़,
सरसो पियरी डांट के,झूमत है लट छोंड़।

जबसे चले गया तुम मइके

सोचेन रहा कि मुक्ति पाउब बरियत्तन के भइया,
मनमानी टोला मा छछलब कोऊ नहीं बोलइया।

जेसे चाहब करब मसखरी अउचट करबै खरचा,
छानब फूकब करब मसखरी जिउ भर करबै चरचा।

ताकौ झॉक करी न कोऊ बोतल घाल मगाउब,
टोला भर के हितुअन का हम कइके फोन बोलाउब।

बरियत्तन के मिली अजादी करब खूब मनमानीं,
ब्याजन माहीं लेब उधारी मिली जो कउनौं दानी।

लेकिन पॉसा उलिटगा भइलो आफत परी कपारी,
जबसे चले गया तुम मइके बिटिया के महतारी।

सइकिल मा डब्बा अरझाये रात दिना हम बागी,
भिंसारेन से ऑखी मीजत पानिन खातिर बागी।

हैण्ड पंप मा कइके कसरत कइसौ मइसौ आयन,
ओरियन चुये पसीना मां हम जिउ काहीं नहबायन।

ससुरी भला बलाय अभागी आय परी है कइसा,
पसरे खटिया हॉफ रहेन हैं करिया कूकुर जइसा।

लडिकौ बिटिया मार फसर्रा घाम चढे भर सोमैं,
कही चला स्कूल चला ता फुसकारै औ रोमय।

घरके भरमजाल मा अरझेन कइसा के निरबारी,
जबसे चले गया तुम मइके बिटिया के महतारी ।

सगला काम गृहस्थी के अब हमरे मूड़े धरिगा,
जेत्ता सोचा मोर रहा सब ऑसू बनिके झरिगा।

अगना फरिका झार झूर के बाँधेन छोरेन गइया,
मॉज मूॅज के भड़वा बर्तन पहुँचेन जाय रोसइयां।

लईटौ रहै गोल ऊपर से चिमनिव ढूंढ़ न पाइन,
अरबा धरी पिसान के मड़की मूड़े से अंउधायन।

चूल्हौ रहै रिसान रोज अब मुसबौ लोटै सारे,
आगी बारी बरै न हमसे तेलौ कांहीं डारे।

कहां रखा है धनिया मिर्चा मेथी केन्ठे ठइयां,
मिलै नहीं कुछ भड़बौ बर्तन बड़ी बेबत्था भइया।

लाय भूज के तसली तसला रोटी जरी बनायन,
अउर बइठ के परसादी कस सन्चै भोग लगायन।

धरे रहैं खरिया भर ओन्हा उनहीं जाय पखारी,
जबसे चले गया तुम मइके बिटिया के महतारी।

चले गया जबसे तुम मइके खोजौ खबर न लीन्हया,
मोबाइल से एक्कव दरकी बातौ भर न कीन्हया।

हम त उकिठ गयन पहिलेन से लड़िकन के सुधि करत्या,
ई बपुरे गभुआरन के त जिउ मां जिउ तुम भरत्या।

लागै जो मइकेन मां निकहा डार ल्या तुम डेरा,
बिल्लियान बागी हम पंचे बस्ती के चउफेरा।

जान गयन हम तुम्हरौ आदत सुनल्या अगली दारी,
मइके फेर न जइहां कबहूं पप्पू के महतारी।

—//—

आपन दिल्ली धरे रहा

हमहीं जियै देआ कथरिन मां आपन गद्दा धरे रहा,
तुमसे जादा निधड़क सोई तुम मखमल मां परे रहा।

थोरेन माहीं मोर गुजारा आपन झोरा भरे रहा,
एत्यो मां कुछ कमीं होय त बोरौ बोरिया धरे रहा।

पोल खुलै न पावै कइसौ जुगुती कउनौ करे रहा,
अउर फंसा जब राजा जइसा जेलौ मांही सरे रहा।

कुर्सी मां जब तक तुम बइठा पावर आपन कसे रहा,
गनी गरीब कइत न देख्या मार ठहाका हंसे रहा।

लाज शरम के बात न कउनौ मोबाइल का धरे रहा,
अउर लजामन देख सनीमा मर्जादा का हरे रहा।

रहै दिहा कुछ अन्नौ दाना चारा जिउभर चरे रहा,
सोवत पइसा जागत पइसा पइसै पइसा कहे रहा,

तेल डार के कानन मांही बंगलन मांहि परे रहा,
हमहीं सुक्ख हबै गामै मां आपन दिल्ली धरे रहा।

—//—

बिटिया के महतारी

केखर केखर सुनी बेबत्था,केखर केखर गारी,
भिंसारेन से मुहूँ फुलाये,बिटिया के महतारी।

आने केर चाकरी कइके,दिन भर जिउ का घोंटी,
रातौ भर के घरे मां आये,सुत्ते मिलै न रोटी।

महगाई बेड़ना अरझाये,केतना करी कमाई,
फाट फूट सब ओढ़ना लत्ता,फटही धरी रजाई।

हमरे मूड़े जउन बिपति है,ओही कइसन टारी,
भिंसारेन से मुहूं फुलाये,बिटिया के महतारी।

सझिअउरे दुअरा मा बइठे,लड़िका हमहीं ताकैं,
पापा आज कुछू लै अइहैं,मुलुर मुलुर सब झांकैं।

दउड़ परैं दुअरा के नेरे,कबरी पिलिया जइसन,
हमहीं का ले आया पापा,पूछैं लागैं अइसन।

गभुआरन कै चुलुक देखिके,कुरूअन आंसू ढारी,
भिंसारेन से मुहूं फुलाये,बिटिया के महतारी।

सोनुआ कहै ले आंये लइआ,पपुआ कहै की टाफी,
मोनुआ हांथ पसारे दउड़ै,लइ आये हैं कांपी।

लउब बिहानें कहि कहिके हम कइसौ के बउराई,
झूर झार जब झोरा देखैं ,भरे तरइना आई।

कइसन के समझाई इनका,दउऔ इनसे हारी
भिंसारेन से मुहूं फुलाये बिटिया के महतारी।

कइसौ मइसौ पीठ छोड़ाके,भीतर कइती आयन,
कुप्पा जइसन मुहू फुलाये,मलकिन कांहीं पायन।

बरिअत्तन के तेल लगाये,बकुरी या महरानी,
कहिस ले आबा हैण्डपंप से,दस दस डिब्बा पानीं।

हैण्डपंप मां कइके कसरत,कइसौ मइसौ आयन,
मलकिन के फरमइसन से हम,सुत्ते सोय न पायन।

बरस पड़ी बिटिआ के अम्मा,जस मछेह के छत्ता,
बागीथे लुगरी अरझाये,जोर जोर के लत्ता।

काल्है हमी बेसाहा धोतिया,बिटियन खातिर सूटर,
टिकुली बुंदवा क्रीम पावडर,अउर मोबाइल दूसर।

लड़िकन के खेलै के लाने,लया बेसाहे लारी,
भिंसारेन से मुहूँ फुलाये,बिटिया के महतारी।

सब अनाज गल्लन के कीमत भागत हैं मनमानीं,
नोन तेल सब्जी भाजी के कीमत सबके जानीं।

या महगाई हमहूं भइया,केतना जोर लगाई,
चलत रहै दुई जूना रोटी,अइसै जुगुत भिड़ाई।

जनत्या तुम्हू जो पापा होत्या,हम होइत महतारी,
भिंसारेन से मुहूं फुलाये,बिटिया के महतारी।

मोर बेबत्था

गॉव शहर के अॅतरी खोतरी,चर्चा है चौपाल मा,
उई का जनिहैं मोर बेबत्था,जे दिल्ली भोपाल मा।

पेंसिन बाली लाइन मांहीं बुढ़ऊ खड़े कल्हारैं,
आय जाय नंबर कइसौ जो,बाबूजी फुसकारैं।

परसों अया फलाने कक्का,आज चुका पइसा,
आपन मुहुं ओरमाये लउटैं,पागल कूकुर जइसा।

केत्तो जोरी पनहीं टूटीं,पेंसिन के दहचाल मां,
उई का जनिहैं मोर बेबत्था,जे दिल्ली भोपाल मां।

बिजलिव बाले करैं फदीहत जब मन आओ काटिन,
बिल मां कमीं करिन न एक्कव घर घर मांहीं बांटिन।

चूक गयन जो कउनौं दरकी,भेजिन लमहर खर्रा,
खुसुर–फुसुर कानें मां कहिगे,बचैं केर एक ढर्रा।

बिकन दिहन पाछे कै कोलिया,लाइट केर बबाल मा,
उई का जनिहैं मोर बेबत्था,जे दिल्ली भोपाल मां।

गॉव गली मेड़उर मां सबतर उनखर गुण्डागर्दी,
मते सांड़ कस छुट्टा बागै,चढ़ी खूब मोटमर्दी।

गलिव घाट मां उनखर मनई,इनहिन का मुरिहामैं,
चूस चूस के हड्डी पसुरी,रोजै भोग लगामैं।

कउआ जबरा जश्न मनाबै,गोरइया के पाल मां,
उई का जनिहै मोर बेबत्था जे दिल्ली भोपाल मां।

गॉव शहर रोजगार खुलैं,सब काम करैं रोजगारी,
केतनौ निकहा काम रहै पै पइहैं फेरौ गारी।

शासन के सब कांमन मांहीं,उनखर ठेकेदारी
हर कामन मां जुड़ी रहत ही उनखर हिस्सेदारी।

घुइर घुइर के इन्ही निहारैं,पान दबाये गाल मां,
उईं का जनिहैं मोर बेबत्था,जे दिल्ली भोपाल मा।

मोटर गाड़ी पक्का बाले,खूब गरीब कहामै,
टुटही फुटही मड़ई बाले आंसू खड़े बहामै।

नीचे से ऊपर तक कोऊ इनखर नहीं सुनइय,
बिल्लियान बागैं ई बपुरे,कोऊ नहीं देखइया।

आंत सकेले कलुआ सोबै ,अक्सर उनखे हाल मा,
उॅई का जनिहै मोर बेबत्था, जे दिल्ली भोपाल मां।

गरीबी अउर बेरामी

एक बेर फगुना कक्का के, टोरिया रहै बेराम,
घुरत रहै घरहिन मा बपुरी,थोरकौ नहीं अराम।

रहै गरीबी डेरा डारे, दालिद रहै सकान,
अउर रहै पछिआने इनहीं,बरबादी कै [illegible]ान।

मेड़उर मा सब गुनिऔ पंडा,आपन गुन अजमाइन,
भुंइया बरम अउर संनासी,खूब पुजाई पाइन।

चुटुक बैदिया बैद डाक्टर,आपन जुगुत भिड़ामैं,
झाड़ फूंक कै पंडौ बाबा,नरियर सिन्नी पामैं।

पइसौ दाम बचा न घर मां,मड़की मड़कौ खाली,
टोरिया केर बेरामीं माही,बिकगै लोटिया थाली।

पर के साल एक टोरिया के,कीन्हिन रहा बियाह,
ओहिन के कर्जा मा फसिके,अबहूॅ रहे कराह।

पहुनौ ढूॅढ़ लिहिन तै निकहा,दइऔ निकहा दीन्हिन,
बिकन दिहिन तै बंधी बंधबौ,नातौ निकहा चीन्हिन।

तबहिन से फगुना कक्का के,दुर्गत परी कपारी,
जान पड़ै न आफत काही,कइसन के निरबारी।

टोरिया केर बेरामीं का जब,नातौ भाई जानैं,
आफत देख ओऊ सब भइया,आये बिगिर न मानैं।

कहैं सब जनें शहर जायके,टोरिया का देखबाबा,
कउन बेरामीं होइगै एही,जाचौ घाल कराबा।

काकी के गहना गुरिया सब,बिकन भांज के कक्का,
अस्पताल लै आमै खातिर,किहिन तयारी पक्का।

टोरिया का टैक्सी मां लादे,अस्पताल पहुचाइन,
भीड़ भाड़ के कारन भइया,भुइयै मा पउढ़ाइन।

दिन भर पड़ी रही कूरा कस,अस्पताल मा भइया,
रोय रोय चिल्लाय बिचारी,कोऊ नहीं देखइया।

तबहिन नर्स कहिस चुप्पै से,मोर बात तुम माना,
खर्चा पानी करा तु कक्का,नियम यहां के जाना।

पइसा बिगर यहॉ के नंचौ,पत्ता तक न डोली,
सौ के नोट यहॉ पकड़ावा,मटक मटक के बोली।

पइसा दाम ठेंघाइन कक्का,भा इलाज तब जारी,
पॉच दिना तक लगसर अइसै,रहा रोज क्रम जारी।

छठये दिना कराइन छुट्टी,किस्मत का गरिआइन,
लै आये टोरिया का घर मा,अब कुछ राहत पाइन।

जाय फेर मंदिर मां कक्का,नरियर रोट चढ़ामै,
रोय रोय के अपने मन के,बिरथा खूब सुनामैं।

कहैं प्रभु जइसा अपनें तैं,फगुना कांही चीन्हे,
अइसन फेर तबाही कउनौ,बैरिव का न दीन्हे।

बड़ा दुक्ख

हॉफ दिहिन हैण्ड पम्प,कुइयां सुखान,
ठाड़ हिबै बपुरी, टंकी उतान।

नल के त ससुरी,मर गय ही नानीं,
बस्ती मा बड़ा दुक्ख,अपना या मानीं।

सूखगै पोखरी, सूखगै तलइया,
बॅधी है पिआसन,परसों से गइया।

जिउचल जे होय, सहै रोज डंडा,
पानीं के झगरा मां,गड़ै रोज झंडा।

हलाहल जिउ होइगा,मिलै नहीं पानी,
बस्ती मां बड़ा दुक्ख,अपना या मानी।

सइकिल मा डब्बा,अरझाये हम बागी,
पानी के खीतिर,हम रात दिना जागी।

मचा हबै चिल्लपों मची है तबाही,
हमहिन भर काहे,पूर दुनिया गबाही।

मील खांड़ हींठे मा,मिलै कहौं पानी,
बस्ती मां बड़ा दुक्ख अपना या मानीं।

उनखे कस आसौं दइऔ रिसान,
काढ़ि लिहिस मनई के,जेतनी है शान।

चुरूआ भर पानी का तरस रहा मनई,
उहै जब बिगाड़े है,भला कउन बनई।

बागि रहे डब्बा लै, राजा औ रानीं,
बस्ती मां बड़ा दुक्ख अपना या मानीं।

बोर के कराये मा,ओइर केर पइसा,
खीस काढ़ बागि रहेन,कूकुर के जइसा।

जान गयन शहर केर हमू सुक्ख दादू,
दऊ केर बेड़ना मा , चलै नहीं जादू।

टैंकर मां बटैं लाग,चीन्ह चीन्ह पानीं,
बस्ती मा बड़ा दुक्ख अपना या मानीं।

आजादी के बरिसगांठ

लगी पचासन ठेगरी बन्डी,केहा जाय देखाई,
आजादी के बरिसगांठ हम,कइसन आज मनाई।

उड़गै सोन चिरइया फुर्र से,किहिस खोथइला छूंछ,
काट दिहिस मनई नीचे से,बिरबा होइगा ठूंठ।

कउअन केर रजाइस माहीं ,कोइली कइसन गाई,
आजादी के बरिसगांठ हम,कइसन आज मनाई।

रात दिना जिउ पेरी फेरौ,सुत्ते खॉय न पाई,
लदे पचासन कर्जन माहीं,कइसन मुहूँ देखाई।

अब सुराज के कउन सुखउटा,अपना लघे सुनाई,
आजादी के बरिसगांठ हम,कइसन आज मनाई।

खेतवा के झगरा मां अरझे,साल पचासन होइगे,
थाना जज मजरेठी धावत,सगले जींगर पकिगे।

कउन चढ़उना उई देउतन का ,लइके जाय चढ़ाई,
आजादी के बरिसगॉठ हम, कइसन आज मनाई।

बरिस पचासन होइगे भइलो,हमका आंखी काढे,
आजादी कइसौ न आई,कबहूँ हमरे डाड़े।

आई होई उनखे घर मां,मोरे घरै न आई,
आजादी के बरिसगॉठ हम,कइसन आज मनाई।

हिबय सयान टोरीबा घर मां,लड़िका बारी चउकैं,
महगाई सुरसा कस बाढ़ै,मलकिन रोजै तुनगैं।

जउन बेबत्था मोरे जिउ के,कइसन के समझाई,
आजादी के बरिसगॉठ हम,कइसन आज मनाई।

(आजादी की पचासवीं वर्षगांठ पर लिखित)

कब तक

छाती मा कोदौ दरबइहा तुम कब तक,
लहुरा के कथरी फरबइहा तुम कब तक।

घूरेव के दिन साइत कबहूं त बहुरय,
आंखी मा धूधुर झोकबइहा तुम कब तक।

घर घर मा लाठी चलबइहा तुम कब तक,
चुरूअन मा आंसू पिबइहा तुम कब तक।

तुम्हरे गुलतुलइ मा कीरा त परी कबौ,
महिपर मा कोचिला खबइहा तुम कब तक।

होइगा अधियार त उजियारौ त होइै कबौ,
घर घर के चिमनीं बुझइहा तुम कब तक।

इनहूं के हितुआ है कहौं कबौ सोच्या तुम,
भउसा के खन्ती पटबइहा तुम कब तक ।

धौं कइसन बइहर बहैं लाग

मनई मनई का भॅजय नही,आपन घिनहाई तजै नहीं,
मन मा रक्खे खुरपा गड़ास,लागै जइसन कुछ करै नहीं।

धौं केतना हेमै पियासे ई,बस खून छाड़ के पियैं नहीं
नन्ची नन्ची के बातन मा,सब फूहर पातर कहै लाग
धौं कइसन बइहर बहै लाग।

कोऊ दुइ आंगुर जाघा मा,बंधी बंधवन के मोघा मा,
कोऊ कोलिया बिरबाही मा,नरदा खंती हरबाही मा।

रन जूझ जांय,अपनै अपना,अंगना फरिका गोरूहाई मां
अब भला बताई अपनै ता,कस मनई छुट्टा चरैं लाग
धौं कइसन बइहर बहैं लाग ।

कोऊ कोहू का डरै नहीं ,मरजादा भै मूरी भाजी,
सब पस्त हेमै इनखे गुनसे,दीदी दादा आजा आजी।

घर भर के कउनौ बात नहीं,टोलौ परोस मां पटै नहीं,
अइसन लागै बिन झगर किहे,इनखर खानौ पचै नहीं।

अब खून केर कीमत घटिगै,पानिव से सस्ता बिकै लाग,
धौ कइसन बइहर बहैं लाग।

कबहूँ जो कोऊ समझाई,कुछ नीकी कइती सरझाई,
बस पलट जबाब रोज पाई, उठ रोज होय हांथापाई।

नंची नंची के बातै मां फर्सा गड़ास सब चलैं लाग
धौं कइसन बइहर बहैं लाग।

मोबाइल के जमाना

भले चाह चूल्हौ न सुलगै,पेट खलाये सोमैं,
मलकिन चाहे रोज बिपत के केत्तो आंसू रोमै।

लड़िकौ बच्चा फीसन खतिर,चाहे कूदैं पंडा,
स्कूलन मा फीस के खातिर,मिलै बिदाई डंडा।

महगाई सुरसा कस धाबै,आपन खीस निकारे,
सोख ले सबकेर कमाई,बइठी रहै डकारे।

थोरकौ फरक पड़ै न इनहीं,बाग रहे मनमाना,
लये मोबाइल उनखे घर मां, गामै फिल्मी गाना।

आजकाल के जून जमाना,खूब तरक्की कीन्हिस,
मोबाइल के डब्बा का,सब खीसन मा भर दीन्हिस।

लेखा पारी दस से जादा अबहूँ गिने न पामै,
तऊ मोबाइल के डिब्बा का कानेन मा ओढ़कामैं।

मोबाइल से लड़िकौ बिटिया,खूबै राहत पाइन,
मौका मिलत पछितिया बइठे,चट्टै बटन दबाइन।

प्रेम केर डउगरा परैं,फेर दूनौं कइती सेरे,
अउर मनै मन बाधैं लागे सात जनम के फेरे।

पहिले दिल के बात कहैका,चिट्ठी खूब पठामैं,
पोल खुलै ता गामौ बाले,जउहर जुज्झ मचामै।

आज काल के जुग मा लड़िका,चट्टै बटन दबाइन,
सेर शायरी फूहर पातर,मैसेज से पहुँचाइन।

रंगे रहै घुघुची के जइसा,अपने रंग मा भइया,
अइसै ढंग रही जो इनखर,लगी न एक्कव दइया।

मोबाइल अब पीछे कीन्हिस,चिटठी केर जमाना,
अउचट किहिस तरक्की मनई,मोर बात अब माना।

बइठ जॉय जो मनई नेरे,भलधैं खूब बसांय,
चून तमाखू गुटका खाके,बोकरन कस पगुरांय।

राष्ट्रगीत के पढ़े न पामै,आजौ एक्कव अक्षर,
मुन्नी शीला वाला गााना,गामै खूब मुहक्खर।

मोबाइल मा पइसा इनखे,रहै न एक्कव कबहूँ,
ऑखिन मा चस्मा अरझाये एक्सन मारैं तबहूँ।

एक दिना के देख तमाशा,खुलिगा मन के जक्का,
लड़िकन के ता बात अउर है,लये मोबाइल कक्का।

कहैं करेक्टर ढीला बाला गाना ल्या लगावा,
अउर कहां से फोटो निकरै,हमहूं न समझावा।

पीछे खड़े तमाशा देखै,चुप्पय चुप्पय काकी,
निकहा के फलिहाइस उनखा,कहिस न लागी टांकी।

कहिस लजा अबहिनौ भर तुम,भजन सुना मनमाना,
रहै देआ लड़िकन के खातिर,उनखर आय जमाना।

सइयाँ किसान

होइगा बिहान अब, बोलिगै चिरइया,
डहर चलीं बन काहीं ,गॉव गेर गइया।

मंदिर मा पंडितजी देउता नहबामैं,
महजिद मा मुल्लाजी अल्ला गोहरामैं।

लड़िका सब खेलि रहे,गुल्ली औ डंडा,
देवी नहबाय रहे, गॉव केर पंडा।

झूलि रहे लड़िका कुछ, बिरबन मा झुल्ला,
मचा हबै सब कइती , हल्ला औ गुल्ला।

एत्यो मां सोउत्या तुम सांस का बजाये,
जगत्या तुम काहे न, हमरे गोहराये।

उठा चली खेत चली जउने मा पेट चली,
बनी रहै घरौ केर निकही जो शान।

जागजा मोर सइयां किसान,

धौरा औ कजरा का डार दिहेन चारा,
श्रम का तयार खड़े आफत का टारा।

गइऔ का पड़िगा भूसा औ सानी,
उठा चला करैं चली खेत मा किसानी।

मेड़ फूट पड़ी हिबै बंधी बधबावा,
जोत बोय तुम्हू कुछ सोना उपजाबा।

सालन निकरिगे हमी धोतिया बेसाहे,
बाग रहेन कबसे हम लुंगरी हिलगाए।

आसौ के साल हमहू गहना गढ़बउबै,
नाक केर नथिया औ सकरी बनबउबै।

हॉथ पियर करै केर बिटिया के सोच,
लहिन जाय साइत जो सोया निसोच।

लड़िकौ के पता रता मिलै नहीं कबहूँ,
आसौ मोबाइल बेसाह लेब हमहूँ।

दऊ केर ढंग देख निकर रही जान,
जाग जा मोर सइयां किसान।

खुली मोर आंखी, जान गयन रानी,
लै आबा जल्दी से एक लोटा पानीं।

धौरा औ कजरा जब तक है साथी,
रेगैं मा लागै जस चले जांय हांथी।

अपने पइसरम से किस्मत चमकउबै,
आसौं के साल बीसन खाड़ी नपबउबै।

बिटिया और लड़िकन का निकहा पढ़ाउब,
सब कांही निकहे स्कूल मा पठाउब।

बनी हिबै पृथ्वी के तुमहिन से शान,
जाग जा मोर सइयां किसान ।

बघेली ब्यंग कविता-

पांच साल

आमा का इमली बताय दिहा कक्कू,
रटे रह्या राम राम खीसा मा चक्कू।

लबरी तुम बोलैं मा बिलकुल न चूक्या,
निबले के आंखिन मां मिर्चय तुम बूॅक्या।

अइसै तुम भउसा मा,बढ़े चला पॉच साल,
मिली फेर कुर्सी होंय देआ,पांच साल।

तुम कांही छाड़ के अपनै मां बात किहा,
भाई का भाई से फोर के तुम घात किहा।

मनई का मनई से निकबर तुम फोर दिहा,
साहुत के बिरबा का निकहा से टोर दिहा।

सरगै मा होरा तुम भूॅज लिहा पॉच साल,
मिली फेर कुर्सी,होंय देआ पाच साल।

मेछन मा ताव दये, बोतल गटकाय लिहा,
जनतन के पइसा का जिउ भर सटकाय लिहा।

सुत्ते जिउ खाय कोऊ, माठा कस भांय दिहा,
अइना जे फुरिन कहै,ओही चटकाय दिहा।

यहै नीक ढर्रा मा, बढ़े चला पांच साल,
मिली फेर कुर्सी ,होय देआ पांच साल ।

सरकारी भुंइया का, टेक्टर लै जोत लिहा,
बिकन बिकन भलधै तुम,जिउभरके नोट लिहा।

बनै लिहा ओहिन मा, इटहाई बखरी,
करे रहा खर्चा ता, उनहीं न अखरी।

भरे रहा उनहूं के, जिउ भर के हींसा,
ध्यान दिहा इनहूं का,भरे रहा खीसा।

मौसेर भाई कस ,बढ़े चला पांच साल,
मिली फेर कुर्सी होंय देआ पांच साल।

करे रहा उनसे तुम, भलधै चिन्हारी,
अरझे मां अपना का, देउतै निरबारी।

पानीं मा हींग चाह, कबहूं न घोरा,
बड़कीबा बंटी का, तबहूँ तुम हेरा।

अइसै तुम कये रहा, जिउभर के गोलमाल,
मिली फेर कुर्सी ,होंय देआ पांच साल ।

पाक अउर कश्मीर

जइसन बकुला नरबा मांही,मछरिन का ताक लगावत है,
मौका पउतै तुरतै भइया, नटई दाबे मुरिहावत है ।

ओइसै आपन पाकौ एंठे,बस मौका कांही ताके है,
पोलखर ता कहौं देखाय नहीं, टकटकी लगाये झांके है।

उठ रोज बिहन्ने रसन केर कुछ बेमत मन मा बांधे है,
भारत के जिउ कश्मीर केर,हथियामैं का अनमाधे है।

व भमर केर छत्ता मांही,नाहक का अंगुरी गूलत है,
केत्ता गुलतुल है चींख चींख,कउनें गुमान मा भूलत है।

कन्नी करतूत नहीं फेरौ,सेंतै हुशियारी झोंकत है,
बघउट आंगे कुकुरन कस,दूरिन से भों– भों भोकत है।

सीमा से लगे मेड़उरे मां,गोला बरसाउब छोड़ देय,
व बेकसूर मनइन कांही,नाहक तड़पाउब छोंड़ देय।

अबहूँ बेरा है सुधर जाय,परिनाम नहीं घिनहा होई,
रहिजई फेर पछिताबै भर,करमैं मा हॉथ धरे रोई।

हम हयन सीध या भूल जाय,फुग्गा जइसन न फूल जाय,
भारत कइती तिरछौ बेंड़ा,आंखिन के गांड़ब भूल जाय।

अइसै जो रंज के रोपब भर,बैरी न बंद करी अबहूँ,
तब गऊ साख पानिव बूड़े,साबुत न बची कहौं कबहूँ।

करगिल के लगे घाव काहीं,हम आजिव बिसर न पायन है,
या दुश्मन के झगरा मा हम, केत्यों काहीं डहकायन है।

जब आय जात ही सुधि उनखर,तब खूनौ खउलै लागत है,
हम दउर पड़ी दुश्मन कइती,कुछ अइसै लागैं लागत है।

सेनौं हमार बैरिन कांहीं,जब करबी कस काटब शुरू करी,
औ कइयक मेर मिसइलन से,बैरिन का पाटब शुरू करी।

भारत के जिउ कश्मीर केर बर्री का देखब बिसर जई,
मिट जई फेर सगला गुमान,अइसन के बैरी बुंकर जई।

बदमाशन के साथ देब,अबहूं भर भइआ छॉड़ देय,
जो बात हमारौ मानै ता,साहुत के झण्डा गाड़ देय।

नहीं फेर नक्सा मांहीं,पकिन के नाव मिटाय जई,
सगली हुशियारी बिसर जई,अइसन के फेर पटाय जई।

धरती मैया के हम लड़िका,सब कफन बॉध के आयन है,
है जियै मरै के बात नहीं,मउतौ के सथरी लायन है।

कश्मीर करेजा भारत के, एही बरकाउब जानिथे,
अपने जिउ से जादा पिरिया,हम ओहिन कांहीं मानिथे।

दिल्ली तक पहुँचावा सब

चिट्ठी पत्री सब गै हेराय ,कम्प्युटर केर जमाना भा,
मनई के दूरी गै पटाय, जबसे मोबाइल आना भा।

लबरी बोलैं के अकिल फेर,सब कोऊ जिउभर सीख लिहिस,
रहा चाह सतनै रीवा, पै दिल्ली झूरै झोक दिहिस।

आज काल सब कोऊ अब लड़िकन का खूब पढ़ाबत है,
बिटियौ अब पीछे नहि आंही,कम्प्युटर घाल सिखावत है।

पै एक चीज न होय पाई,साइत जो कबहूँ होइन जात,
मनई के अकिल खोपड़ी मा,मेमोरी कारड बेड़र जात।

कम्प्युटर के सगले फंसन मनइन से चालू होइ जाते,
हुशियारी देखते देउतौ भर,इनखे आंगे चउआ जाते।

हमहीं चुन लेइत ओ भइया,अंगले चुनाव मा जो अपना,
लबरी मानब अपना पंचे , होइ जात मोर पूरा सपना।

कुछ जोर जुगुत बइठाये से,सरकारौ आपन बनिन जात,
कुर्था पहिरित अइसन उज्जर,कि हंसौ फेर लजाय जात।

बइठाइत बइठक दिल्ली मा,अउते सब ज्ञानी विज्ञानी,
रक्खित प्रस्ताव वहैं आपन,अपना फुर बात हमा मानी।

प्रस्ताबौ पास होय बिलकुल,हमहीं त पूरी आसौ है,
लागू करबामै के सगले, गुन ज्ञान हमारे पासौ है।

अब सुनी बताई का करबै, या मुद्दा केखे बारे मा,
नेता मंत्रिन से शुरू करब,कारड धर जई कपारे मा।

सगले जनतन के ओरहन का,कारड मांहीं कर देब सेव,
डीलेट करे न पामैं ई,कुछ अइसन जुगुत बनाय देब।

कुछ सुधर जई देसौ आपन,एहिन से राय का माना अब,
अब चुना ए दरकी हमही.सब,औ दिल्ली तक पहुंचावा सब।

लिखी रहैं कोदवा कै रोटी

मम्मीं पापा दीदी दादा ,सब जन हमहीं मानैं,
लड़िका एकठे रहेन जो घरमा,कुल के दीपक जानैं।

राजा के लड़िकन के जइसन,पालन पोसन कीन्हिन,
कमीं कहौ ठे होंय न पाई,अउचट खर्चा कीन्हिन।

बीसन जोड़ी ओन्हा पनहीं,शहर जाय लै आइन,
अंग्रेजी स्कूल मा जाके,नामौ घाल लिखाइन।

सोचैं लड़िका पढै जात है ,कुल के नाव जगाई,
साइत होय सहारा कबहूँ,अफसर जो बन पाई।

आपन फरज नेबाहिन निकहा,ट्युसन घाल लगाइन,
स्कूलन मा जांय के लानें,सइकिल नई कसाइन।

मिलत रहा खरचौ जिउभर के,चढ़िगै खूब मोटाई,
लिखी रहै कोदवा कै रोटी,खीर कहाॅ से पाई।

कइसौ मइसौ कांख कूख के,नउमा तक ता आयन,
दसमा मा जब फेल भयन,तब आपन मुॅहु ओरमायन।

फेल भये सबके आशा मा फिरिगा,भलधै पानी,
जइसा के फलिहाइन पापा,हमिन मनैं मन जानीं।

बरस पढ़ै रोजै असाढ़ कस,जइसै घर मा आमैं,
गिल्लियान जिउ मांहीं लागै,जब हमहीं गरियामैं।

लाग कायली औचट हमहीं,एक ठे जुगुत भिड़ायन,
रातौ रात भगैं का घर से,मौका फेर लगायन।

चुप्पे चुप्पे घुसेन भड़ारे,खोलेन बक्सा कांहीं,
बक्सा के सब पइसा कौड़ी,डारेन झोरा मांहीं।

पगरा कांही कूद के सीधे,बाहर कइती आयन,
डाला का रोकबायन जल्दी,स्टेशन तक आयन।

बंबइया गाड़ी के जलदी,टिकस लिहेन कटबाय,
अउर धरे झोरा कांधे मां,बइठेन गाड़ी जाय।

गाडिव मांहीं भीड़ रहै,हम खायन मन भर धक्का,
मूड़े मा बीड़ी सुलगामैं,खोखैं एक जन कक्का।

कही बुता देआ बीड़ी कक्का,मूड़ें मा न खोखा,
कहैं खड़े रहो चुप्पय दादू,गमरा न तैं थोका।

ऊपर बाली सीटौ से कुछ पानी खूब अड़ामैं,
चना चबइना चाब चाब के फोकली खूब उड़ामैं।

कइसौ मइसौ सहत सहाबत बंबइआ तक आयन,
खीसा कइत हांथ कीन्हेन तब अपने का गरिआयन।

पइसा कौड़ी गे हेराय सब,कउनौं काटिस खीसा,
गहनौ गुरिया सब डहकायन,मम्मी बाला हींसा।

नंगा झोरी बने भिखारी स्टेशन मा बागी,
भूखौ निकही लगी रहै ,लगिगै पेट मा आगी।

बिल्ल्यिान सब अपनेन मांही,कोऊ नहीं पुछइया,
सुसुक सुसुक के रोई अहिमक,कउनौ नहीं देखइया।

तबहिन नजर पड़ी ता देखेन,स्टेशन के दूरी,
कउनौ फेक दिहिस तै ,अइसै झोरबा बांधी पूरी।

सबके नजर बचाबत दउड़ेन,झोरबा कांही लीन्हेन,
अउर उठाके चुप्पय चुप्पय,खीसन मा भर दीन्हेन।

नीम केर बिरबा के खाले, स्टेशन के बाहर,
झोरा खोल लिहेन परसादी, बासी पूड़ी ठाहर।

कइयक दिन के थके थकाये लगिगै हमही झपकी,
अउर सांझ के नीद खुली तब,पुलिस आय के झपटी।

धोबी के कूकुर के जइसा, बिल्लियान हम बागी,
बड़ी बड़ी बिल्डिग का देखिके,पागल जइसन भागी।

हाव भाव जब देखिन एकजन,देखेन हमी बोलामैं,
हांथ देखाके हमरी कइती, हमहीं खूब घोरामै।

सकिले बटुरे गयन चुपारे, दूनौ होथ का जोरे,
कहिन काम तै करिहे टोरबा, होटल मांही मोरे।

सोचेन ठीक कहत है भइया,काम यहै लै लीन्हेन,
हाल चाल बंबइया के लख, पांच महीना कीन्हेन।

रात दिना जूठन हम धोई, खानौ पूर बनाई,
लातौ बात के कमीं न एकव,कइयक दरकी पाई।

एक दिना बाबूजी दुइ जन, देउता बन के आये,
मोर बेबत्था सुनिन बिचारे, खड़े रहैं चउआये।

होटल मालिक का फलिहाइन, कुर्सी ठइयां जाके,
कहिन पठावा एही घर तुम, स्टेशन मां जाके।

नहीं अबहिनै कोतवाली मा रपट जाय लिखबाउब,
सड़ जइहा जेलौ मा जाके, धारौ खूब लगाउब।

पइसौ कउड़ी खर्चा पानी,घर तक का दै दीन्हिन,
हमरे खातिर देउता होइगे,आपन जइसा चीन्हिन।

स्टेसन मा हरबिन जाके, टिकस फेर कटबायन,
पहिले जइसन सहत सहाबत,पुनि के घर तक आयन।

मम्मी जइसै देखिस हमहीं, लगिगा एकदम दरका,
ऑखिन से ओरिया अस चुइके, बहै लाग फेर ढरका।

मम्मी मम्मी कह गोहरायन ,तब कइसौ के बोलिस,
अउर करेजा मां छुपकाये, कुरूअन आंसू रोइस।

रोय रोय के मम्मी का हम, आपन बिपत सुनायन,
देखि लिहेन अपना सब भइया, बंबइआ होइ आयन।

घर से निकहा सुक्ख कहौ न,जान गयन हम भइया,
दुनिया हिबै सिरिफ मतलब के,कोउ नहीं पुछइआ।

कान पकड़ के मागेन माफी, गलती फेर न करबै,
निकहे सुड़उर लड़िका बनबै,खूब लगन से पढबै।

मम्मी कहा जाय पापा से, पुनि के नाव लिखाबा,
अउर हमी गामै के शाला, काल्है से पठबाबा।

भोग लिहन हम करनी कांही,कुल के नाव जगउबै,
फेर कबौ सपनेव मा भइया, बंबइया न अउबै।

मोरिला बाबू बने दरोगा

मोरिला बाबू बने दरोगा, आपन पूँछ डोलामैं,
बड़े शान से कुर्सी बइठे,आपन हुकुम चलामैं।

मिट्ठू मिंयाँ पहिरके खाखी,घूमैं बने सिपाही,
गिधिया आपन रोब देखबत,सबसे करै उगाही।

चिल्हिया जाय सरग मां घूमै,आपन ताक लगाबै,
गलगलिया फुनई मां बइठे आपन बिपत सुनाबै।

मुंसी बाबू बने टिटिहरी, रातै गस्त लगामैं,
मारै सेंटी रात रात भर आपन फरज निभामैं।

बया चिरइया घुसे खोंधइला,चोंच निकारे झांकै,
चुन्नू मुन्नू लड़िकन कांही,बइठे अपने ताकै।

रही सुरक्षा फेरौ एक दिन,कौआ ताक लगाइस,
बया चिरइया के बच्चा का चट्टै चोच दबाइस।

चुहूँ चुहूँ चिल्लाय बिचारा,कहै छोड़ि दे भइया,
कौआ फेरौ एक न मानिस,झटक दिहिस ओ दइया।

पता लाग जब या घटना के,बया चिरइया कांहीं,
रोय रोय अहिमक गरिआइस,बैरी कउआ कांही।

बया चिरइया जाके थानें,तुरतै रपट लिखाइस,
रोय रोय मोरिला बाबू का आपन बिपत सुनाइस।

बने दरोगा मोरिला बाबू चट्टै एक्सन लीन्हिन,
कौआ का चौकी लामैं के,जल्दिन आडर दीन्हिन।

लये डड़उका पांच सिपाही,कौआ का डोरआए,
नटई मा हथकड़ी फांस के,चौकी तक लै आए।

गलिव बीच मां कउऔ दादू खूब बिदाई पाइन,
अउर मनै मन सबका भइया जिउभर के गरिआइन।

तबहिन लये डड़उका भांजत,मोरिला बाबू आये,
ठाढ़ रहै कउआ मन डारे, रोबत मुहुँ अउधाए।

मान लिहिस कौआ गलती का,सौ के नोट देखाइस,
अउर मोरइला के कुर्सी के खाले से पहुँकाइस।

कौआ दादू मुक्ति पाइन,सन्चै घर मा आये,
काल्ह केर झपटी रोटी का बइठे भोग लगाये।

यहै आय कानून आज के,निबले का मुरिहाबा,
नोच नोच के हड़्डी पसुरी,रोजै भोग लगाबा।

पढ़ाई अउर परीक्षा

सगला साल निकरिगा भइलो,पढ़ेन न एकव आना,
भिंसारेन से मूड़ हलायन,कीन्हेन खूब बहाना।

फोकट मांहीं बस मा बइठे,घूमेन सतना रीमा,
पूरे साल किहन बदमाशी,देखेन खूब सनीमा।

स्कूलन मा फीस के खातिर, घर से पइसा लीन्हेन,
बामन ठे पत्तन के भीतर,फीस ओह हम दीन्हेन।

दद्दा सोचै पढ़ै जात है, दादू मोर स्कूल,
खर्चा पानी अउचट दीन्हिन,करिन न कउनौ भूल।

सुनहर ताक बखारिव पेउला,छूंछ किहेन हम भइया,
धौं दद्दा के आंगे हमहीं ,कोऊ हबै बोलइया।

दस जोड़ी ओन्हा औ पनहीं,साल भरे मा पाई,
घोघई मा टाई हिलगाये,दादा हमिन कहाई।

जेम गरम है एहिन सेरे,लड़िका बागैं पीछे,
सबके नेता हमिन कहाई,जनता हमरे नीचें।

बात करै मा सब जन मनई,मन मांही सकुचाय,
जमगै धाक मेड़उरे मांहीं,हमहीं खूब डेरांय।

कहि देई जउने का एन्ठे,ढाड़ रहे तै मोगरा,
है मजाल कउनौ के थोरौ,खोल दे जो थोभरा।

नातौ भाई घर मां आमै मोर बडाई मारैं,
हमरै गुन बताय के दद्दा,लबरी पोंड़ी झारैं।

खूब पढ़ाउब दादू का हम,पढ़िके होई अफसर,
घूरेव के दिन कबहूं बहुरी,मन मा सोचै अक्सर।

इंतिहान के सुधि आये से,खुलिगा मनके जक्का,
फेल भये मा दद्दौ कांही,लागी अहिमक धक्का।

उर परीक्षा के जब रहिगे,चार दिना है बांकी,
पोथी पत्रा खोल खोल तब,मुलुर मुलुर हम झांकी।

सगले पोथी पत्रन मां अब भूतै भूत देखाय,
हम डेराय के दुपुक रही,उइ दउरै खांव चबाय।

रात दिना देवी देउतन से,रोज गोहार लगाई,
पास किहे सरसुतिया मइया,नरियर रोट चढ़ाई।

जो गोहार तैं आसौ सुनते,किरपा करते मइया,
तोरै हबै सहारा बांकी, पार लगउते नइया।

अइसन गलती कबौ न करबै,जान गयन महरानीं,
कइसौ मइसौ खीच तान के,तार दिहे गुणखानीं।

भुइया बरम खेर के देउता,कइसौ के निरबारा,
सबके साथ यहौ कूरा का,कइसौ मइसौ टारा।

देशी घिउ के रोट लेबाला,तुमहीं खूब चढाउब,
अउर पचासन पंडा जुरिके,दिन भर भगत कराउब।

सबका सुमिर गोड़ लइपरके, दीन्हेन हमू परीक्षा,
फेल भयन सब गुड़ गोबर भा चली न एकौ इच्छा।

"कुशवाहा" के कविता सुनिके, पढ़े रहया तुम दादू,
इंतिहान मा साथ न देई, कउनौं टोना जादू।

पप्पू पास होइगा

काखौ गाघा बनै न सूधे,पोथी पढ़े न पामै,
धरे मोबाइल कानें माहीं,फिल्मीं गाना गामै।

भरे लीद हस गुटका पाउच,गारुअन कस पगुरांय,
पिचिर पिचिर थूँकै मनइन ठे,टोंके से गमरांय।

गारी बरसै अइसन जस चउमास होइगा,
एत्यो माहीं भइया,पप्पू पास होइगा।

जाय पछितिया ताश के पत्ता,सगले दिन ई फेंटै,
अंधिअरहा हउली मा बइठे,पउआ अद्धी सोंटैं।

रकम कहां से आई,मुद्दा खास होइगा,
एत्यो मांहीं भइया,पप्पू पास होइगा।

साल भरे मां स्कूलन के डाड़े कबहूं जइहैं,
कक्षा मांही पीछे बइठे,सीटी घाल बजइहैं।

उनखे कइती सनकी मारैं,एतना हेमैं कुलक्षन,
सबै गुरूजी जानै इनखे,बरबादी के लक्षन।

गड़हिन मा गोड़ौ न बोरैं,तऊ चिनंगा पइहैं,
सीध सबै पढ़ता लड़िकन का, भलधै ई मुरिहइहैं।

बिसर जाय रावन जइसन के नास होइगा,
एत्यो मांही भइया पप्पू पास होइगा।

कबौ गुरूजी ओरहन लइके इनखे घर जो आमैं,
आपन मुहूं लटकाये लउटैं,अइसन के फलिहामैं।

कहै बतावा पहिले मोहीं,कइसन इन्ही पढ़ाया,
हम त करी मजूरी दिन भर,मूड़े तुम्हिन चढ़ाया।

सुना महट्टर साहब अबकी फेल जो इनहीं करिहा,
जान लिहा तुम गामौ मांही,गोड़ फेर न धरिहा।

मुद्दा इनखर गरे मां अरझी फॉस होइगा,
एत्यो मांही भइया,पप्पू पास होइगा।

अइसै फेर पढाई कइके,दीन्हिन जाय परीक्षा,
रही कड़ाई भारी जोरगर,चली न एक्कौ इच्छा।

खुला रिजल्ट देख चउआनें,भउसा यहॉ के भइया,
फेल हेमै कुछ पढ़तौ लड़िका,डगमग होइगै नइया।

गरियारन का पास करैं का,लिहिन गुरूजी ठेका,
अउर रकम जादौ धरबाइन, नंबर निकहे देंका।

बिना पढ़े ब्युहर के घसिला पास होइगा,
एत्यो मांहीं भइया पप्पू पास होइगा।

बने पुजेरी बकुला भाई

बने पुजेरी बकुला भाई ,देउतन का नहबामैं,
रोज बिहन्ने मंदिर बइठे,घण्टी घाल बजामै।

अउर लिलारे मा ओढ़कामै,चंदन दै सरपोटा,
राख लिहिन झोखरा मूड़े मा,बाधैं लंबा चोंटा।

तुलसी माला लइके बागै,तलवा के चउफेरा,
मछरिन का परबचन सुनामै,डारैं रोजै डेरा।

कहैं आज से मछरी बहिनी,हम तुमही न मरबै,
पहिलेन पाप किहेन है,एतना नरकै मांही सरबै।

अब निसोच तुम निधड़क होइके,तलवा मांहीं बागा,
अंतिम दार बुढ़ाती बेरा,है बिचार मन जागा।

गई सबै चउआय मछरियॉ,बकुला क़ा होइगा,
रहा सदौं मुरिहाबत सबका,साधू कइसन होइगा।

तबहिन पाढ़िन उचट के बोलिस,एखर बात न माना,
काल आय हमरे पंचन का,दुश्मन एही जाना।

लगी भूँख जब निंधडक एही,बिसर जई सब पूजा,
भूँख मिटामैं केर तरीका,कउनौ नहिआय दूजा।

घोड़वा चारा चरै न कबहूँ,अइसन कइसे होई,
लइ लेई बइठान बिचारा,कुरूअन आंसू रोई।

चिड़िया रानी

बड़े बिहन्ने चिड़िया रानीं,फुदुक फुदुक के आबै,
चुहूँ चुहूँ चिउ बोलि बोलि के,हमका रोज जगाबै।

घोर देय मिसरी कानन मां,जिउ हरियर कइ देय,
नीद अउर आलस का हरके, फुर्ती का दई देय।

रंग बिरंगे पंखन बाली, केत्ती भोली भाली,
नाच देखाबै अंगना मांही,चोंच लगाये लाली।

हमहूँ घूमीं नाची साथै,हांथ पकड़ न आबै,
बड़े बिहन्ने चिड़िया रानीं हमका रोज जगाबै।

कहौं चढ़ै डेहरी के ऊपर,कहौं चढ़ै परभितिया,
अउर कहौं चढ़िजाय चियारे,बोलै कहौं पछितिया।

बइठ जाय निमियां के ऊपर झूलै मन भर झुल्ला,
देखि देखि चिड़िया रानीं का मन समांय नहीं फूला।

दूरिन दूरी रहै हमेशा, हमरे लघे न आबै,
बड़े बिहन्ने चिड़िया रानीं, हमका रोज जगाबै।

देखी चुनू चुनू आंखिन मां,काजर आंजे आई,
टोनौ डीठ न लागै जउने,टिक्की घाल लगाई।

हमका अपने जिज्जी जइसा,लागै बहुत पियारी,
सबसे पक्की आय सहेली,लागै हमहीं न्यारी।

देखि देखि चिड़िया रानीं का, मन चंगा कइ लेई,
निंदी बोक्की दूरी कइके,पोंथी का धई लेई।

डट के मन से करी पढ़ाई,नबर निकहे पाई,
मम्मीं पापा खूब खेलामै,चिड़िया के गुन गाई।

टोलौ मांही हमहीं सब जन आपन जइसा मानैं,
मम्मी पापा दादा दादी,तुलसी बिरबा जानैं।

बड़कू भइया लये कंधइया,हमका रोज घुमाबै,
बड़े बिहन्ने चिड़िया रानी,हमका रोज जगाबै।

सोउत्या हैं धौं जगत्या हैं

पढ़ लिखके डिगरी गठिआए आजिव जुग मा बगत्या है,
जान न पाई दादू तुमही,सोउत्या धौं जगत्या है।

दादा के पइसा नास किहा,दीदिव के संकरी गहन किहिन,
बिटिऔ का काज ठिकाइन न,पइसा का अमरित जान धरिन।

बंधी बंधवा सगले बिकगे,होइ गयन रिनी सेठौ के हम,
फुटहा घर भर बांकी रहिगा,होइगयन भिखारी जद्दप हम।

हम मूरूख रहेन त भोग लिहेन,तुम पढ़ि लिखिके का करत्या है,
जान न पाई दादू तुमही,सोउत्या है धौं जगत्या है।

जिउ पेर किहेन मेहनत फेरौ,सुत्ते जिउ खांय नहीं पायन,
चिथरी बंडी का अरझाए,असमौं भर सिलौ नहीं पायन।

टुटही पनहीं का हिलगाए,कइसौ के आपन गुजर किहन,
तुम्हरे पढ़नन के खर्चन मां,हम पाई पाई जोर दिहन।

हम तुम्हरे खीतिर किहन का, अब तुम सोचा का करत्या है,
जान न पाई दादू तुमहीं,सोउत्या है धौं जगत्या है।

पढ़े लिखे तुम किहा का,पोथी पत्रन से लिहा का,
मुरूखौ से मूरूख बने हया,कालेजन मा तुम सिख्या का।

सरसुतिया केर खजाना से तुम कइसन अकिल बटोर लिहा,
खीसन मां कइयक पेन खोसे,तुम केतने फारम भरत्या है।

जान न पाई दादू तुमही,सोउत्या है धौं जगत्या है,
कलजुग के देउतन के,केतनो चक्कर हम काट काट।
कइसौ के पाय गयन भुंइयां,होइगै पट्टन के काट छॉट।।

कुछ जान परै टरिगा दालिद,पै मोरौ जिउ अब चलै नहीं,
या डिगरी के झोरबा धइके,करत्या तुम थोरकौ काम नहीं।

छाड़ा दुनियां के दंद फंद, मोबाइल टागे फिरत्या है,
जान न पाई दादू तुमही,सोउत्या है धौं जगत्या है ।

हम पढ़ेन नहीं पै लढ़ै हयन,बरिअत्त्न जुगुत लगायन है,
काका के गहन धरी भुंइयां, मुसकिल से मुकतायन है।

लइके बरदा हर काम करा,खेतवा का तुम्हू बनाय ल्या,
कुछ नई नई तकनीकन से,आपन किस्मत चमकांय ल्या।

टोला परोस मा नाव करा,तुम सगला दिन ता फिरत्या है,
जान न पाई दादू तुमहीं सोउत्या है, धौं जगत्या है।

अबहूँ भर तुम जागा

सगले घिनहा काम छांड़िके ,नीकी कइती भागा,
काहे निधड़क सोउत्या दादू अबहूं भर तुम जागा।

मान गयन कि दादू तुमही,मिल गै ही आजादी,
पढै लिखै का छूट मिली है,करा न तुम बरबादी।

बनिके हाकिम अफसर दादू,देश के नाव जगावा,
काहे निधड़क सोउत्या दादू,अबहूँ भर तुम जागा।

अबहूं भर तुम जक्का खोला,सोचा अउर बिचारा,
भमरी मांही फसे देश का,जउने मिलै किनारा।

बनके अंगुआ तुम्हिन देश का,आंगे कइत बढ़ावा,
काहे निधड़क सोउत्या,दादू अबहूं भर तुम जागा।

आंखी के किटकिरी तुम बनिके,दुश्मन का ललकारा,
ताल ठोक के देश के खातिर,टुच्चन का फटकारा ।

बेईमानन के छाती चढ़िके , ठाहर हूसा दागा,
काहे निधड़क सोउत्या दादू अबहूं भर तुम जागा।

आजादी के खातिर सोचा, केतना खून बहाइन,
गाँधी भगत,सुभाष सबै मिल,केतना कष्ट उठाइन।

देश प्रेम के मूल मंत्र का, जन जन तक पहुचावा,
काहे निधड़क सोउत्या दादू,अबहूं भर तुम जागा।

भउसा खाता के आंधी मां ,उड़ी जाय आजादी,
भ्रष्टाचारिन के बूड़ा मा, बही जाय आजादी।

हुशियारी के नौका मांही ,चढ़िके जाय बचावा,
काहे निधड़क सोउत्या दादू अबहूं भर तुम जागा।



